The Research Dialogue
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-2, Issue-2, July-2023
www.theresearchdialogue.com

शिवमूर्ति की कहानियों में स्त्री चेतना (विशेष सन्दर्भ:'केशर कस्तूरी')

नीरज कुमार पाण्डेय
सहायक आचार्य हिन्दी
किसान पी0जी0 कॉलेज,
ई–मेल–neerajpandeybelwabhan@gmail.com

सारांश–

शिवमूर्ति ग्रामीण जन जीवन की संवेदना को मूर्त करने वाले रचनाकार हैं। ग्रामीण परिवेश से जुड़ी, उनकी कहानियाँ मुख्य रूप से स्त्री की समस्याओं को उजागर करती हैं। स्त्री लम्बे समय से पुरुष समाज द्वारा शोषित होती रही है। पितृसत्तात्मक समाज स्त्री का शोषण कर उसे उसके अधिकारों से वंचित करता रहा है। शिवमूर्ति ने स्त्री की पीड़ा एवं दंश को गहरे तक पहचाना है और अपनी कहानियों के माध्यम से पितृसत्तात्मक समाज की क्रूरतम विकृतियों को यथार्थवादी ढंग से प्रस्तुत किया है। शिवमूर्ति समय एवं समाज़ की गति को पहचानने वाले कथाकार हैं। अपनी कहानियों में वे स्त्री की समस्या को एक नये दृष्टिकोण से देखने एवं चित्रित करने का प्रयास करते हैं। स्त्री जीवन के प्रत्येक पक्ष का चित्रण करते हुए वे स्त्रियों में विद्यमान मानवीय गुणों, करुणा, त्याग, साहस, संयम, दृढ़ता के साथ–साथ अन्धविश्वास, दुर्बलता, ईर्ष्या, द्वेष और रूढ़िवादिता को भी प्रस्तुत करते हैं। स्त्री चेतना एक भावों को समझने एवं अभिव्यक्त करने का सफल प्रयास उनकी कहानियों में दृष्टिगत होता है। शिवमूर्ति के स्त्री चेतना का यथार्थ आजादी के बाद के परिवेश की अभिव्यक्ति जिसमें मुख्य रूप से ग्रामीण परिवेश में रहने वाली स्त्रियों के यथार्थ को चित्रित किया गया है।

बीज शब्द–*पितृसत्तात्मक, भाग्य, विडम्बना परथान, अनशन, कसाई, सिकरेटरी, आत्मतुष्ट, शुचिता, स्वार्थ पटुता, प्रतिरोध फुलवारी।*

स्त्री चेतना की दृष्टि से उनका 'केशर–कस्तूरी' कहानी संग्रह अत्यधिक महत्वपूर्ण है। इस कहानी संग्रह में हाशिए के समाज के स्त्री जीवन का यथार्थ चित्रण हुआ है। जिसमें स्त्री एक ओर पितृसत्तात्मक समाज द्वारा लिए गए अत्याचार का प्रतिरोध करती हुई दिखाई देती है तो वहीं दूसरी ओर उसने भाग्य की विडम्बना को भी स्वीकार कर लिया है। इस कहानी संग्रह की प्रमुख स्त्री पात्र ही नायकत्व का निर्वहन करती हैं। इस संग्रह की कहानी 'कसाईबाड़ा' शिवमूर्ति की संवेदना और शिल्प की बेजोड़ कहानी है। इस कहानी में पुरुष समाज द्वारा निर्मित कुचक्र में फँसी एवं जूझती नारी का चित्रण हुआ है। गाँव का प्रधान सनिचरी की लड़की के साथ गांव की अन्य नौ लड़कियों को आदर्श विवाह के बहाने से देह व्यापार करने वालों को बेच देता है।

आदर्श विवाह के धोखे से गाँव की लड़कियों को वेश्यालय पहुँचाने वाले प्रधान की काली करतूतों को अर्द्धरात्रि में वेश्यालय से साहस कर भागकर आने वाली सुगनी, सनिचरी के पास जाकर अपनी आप बीती बताती है। वह सनिचरी से कहती है– '' काकी अपना पस्थान कसाई है। इसने पैसा लेकर हम सबको बेच दिया है। शादी की बात धोखा थी। हम सबको पेशा करना पड़ता है, रूपमती को भी।''[1]

यह बात अब सनिचरी को ज्ञात होती है। तो वह प्रधान के विरुद्ध अनशन पर बैठ जाती है और उसके हृदय की वेदना इन शब्दों में फूटकर बह निकलती हैं– ''मोर बिटिया वापस कर दे बेइमनवा, मोर फूल ऐसी बिटिया गाय–बकरी की नाई बेचि कै तिजोरी भरै वाले।''[2]

गाँव के प्रधान के द्वारा सनिचरी का यौन शोषण भी होता है। दरोगा के पूछने पर कि उसने फूल जैसी बिटिया को जन्म क्यों दिया, तो मारे भय के सनिचरी लोक लाज की चिन्ता किए बिना सत्य को उद्घाटित करते हुए दारोगा से कहती है– ''हुजूर, पैदा तो इनही पस्थान जी ने किया था। पूंछे का मौका भी नहीं दिये। हमारे आदमी तो तब परदेश गए रहे।''[3]

इस प्रकार सनिचरी पुरुष समान की दोहरी मार को झेलती है किन्तु उसमें क्रूरतम व्यवस्था के विरुद्ध लड़ने का साहस है। वह प्रधान के विरुद्ध अनशन करती है। लीडर जी उससे कहते हैं कि यदि वह अनशन पर बैठी रही तो मुख्यमन्त्री आकर उसके अनशन को तुड़वाएँगे। अन्ततः प्रधान जी दूध में जहर देकर समिचरी के अनशन को तुड़वाकर उसे मृत्यु के घाट उतार देते हैं।

इस प्रकार पुरुष समाज, अत्याचार का विरोध करने पर सनिचरी को मृत्यु रूपी प्रतिफल मिलता है।

लीडर जी धोखे से सनिचरी की दो बीघा जमीन भी रजिस्ट्री करा लेते हैं। यह बात जब लीडर जी की पत्नी को पता चलती हैं, तो वह अत्यधिक क्रोधित होकर कहती है–''तुम लोग कसाई हो। सारा गाँव कसाई बाड़ा है। मैं नहीं रहूँगी इस गाँव में।''[4]

इस प्रकार यह कहानी पुरुष समाज द्वारा स्त्रियों के लिए गये यौन शोषण को चित्रित करते हुए स्त्रियों के अधिकार के प्रश्न को उठाती है। सनिचरी और लीडर जी की पत्नी में अपने अधिकार के प्रति जूझने की शक्ति विद्यमान है।

'अकालदंड' कहानी में सिकरेटरी बाबू के द्वारा स्त्रियों का शोषण किया जाता है, किन्तु 'अकालदंड' की सुरजी सिकरेटरी बाबू का प्रतिरोध करने में सक्षम है। भीषण सूखा के कारण अकाल की स्थिति उत्पन्न होने पर सिकरेटरी बाबू को जनता में राहत सामग्री बांटने की जिम्मेदारी मिलती है जिसका वह नाजायज फायदा उठाकर स्त्रियों का यौन शोषण करना चाहता है। सुरजी को वे खाने–पीने की वस्तुओं का लालच देते हैं जिससे कि वे सुरजी का यौन शोषण करने में सफल हो सकें किन्तु सुरजी सिकरेटरी बाबू की चाल को समझ जाती है। रात्रि के समय में जब सिकरेटरी बाबू गलत. मंशा से सुरजी की झोंपड़ी में घुसते हैं, और सुरजी से जबरदस्ती करने लगते हैं तो वह सिकरेटरी बाबू को धक्का मारकर गिरा देती है जिससे वे बहुत अधिक आहत होते हैं। शिवमूर्ति सुरजी के आक्रमण से आहत सिकरेटरी बाबू की व्यथा कथा एवं कुत्सित मनोदशा को व्यक्त करते हुए लिखते हैं– 'पावर' को हमेशा दोनों हाथ से पकड़ा है और बर्फी, जलेबी, क्रीम, पाउडर पर खुले हाथ से खर्च किया है। उमर रीत गई इस राह चलते कभी ऐसी आन बान वाली जनाना से पाला नहीं पड़ा। जितना रूप उतना ही नखरा। प्राण से प्यारी दादी का आधा बाल बीन लिया है साली ने। बिल्ली की तरह सारा शरीर नोच डाला है। ऐसी करारी शिकस्त .....नहीं। अब और नहीं। फिर नंही पड़ना इस फरफन्द में।'[5]

इतने पर भी सिकरेटरी, बाबू सुरजी का पीछा नहीं छोड़ते हैं और अन्त में सुरजी अपनी रक्षा के लिए और सिकरेटरी बाबू पर घातक आक्रमण करती है। शिवमूर्ति लिखते हैं– 'सिकरेटरी के तम्बू के अन्दर बाहर भीड़ जमा हो गई है। अन्दर का दृश्य बड़ा भयानक है। सिकरेटरी बाबू

पलंग पर नंग–धडंग पड़े छटपटा रहे हैं। सुरजी ने हँसिए से उनकी देह का नाजुक हिस्सा अलग कर दिया है और पिछवाड़े के रास्ते भागकर अंधेरे में गुम हो गई है।''[6]

इस प्रकार 'अकालदंड' की सुरजी साहसी नारी का प्रतिनिधित्व करती है जो पुरुष समाज के अत्याचार से लड़ने में सक्षम है।

'सिरी उपमा जोग' एक ऐसी नारी की दारुण कथा है कि जिसका पति नौकरी पाने के बाद अपनी पत्नी तथा बच्चों को छोड़कर शहर में जज की लड़की से दूसरा विवाह कर लेता है। जबकि पहली पत्नी उसे अपने गहने बेचकर पढ़ाती है और घर की सारी जिम्मेदारियों का निर्वहन करते हुए अधिकारी बनाती है। उसी पति को अधिकारी बनने के बाद पत्नी के शरीर से भूसे जैसी गन्ध की अनुभूति होती है। संघर्ष के दिनों की सच्ची, सहधर्मिणी और फूल जैसे, दो बच्चों को छोड़कर वह शहर में दूसरी पत्नी के साथ सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करता है और दस वर्ष तक अपनी पहली पत्नी और बच्चों का हाल तक नहीं लेता है। पहली पत्नी जीवन पथ पर आगे बढ़ते हुए जब परिवार के अन्य सदस्यों द्वारा सतायी जाती है तो वह अपने ए.डी.एम. पति को चिट्ठी लिखकर पुत्र लालू के हाथों भिजवाती है। उस चिट्ठी को पढ़कर ए.डी.एम. साहब विचलित हो उठते है और उन्हें अपने किए हुए पर पछतावा होता है। शिवमूर्ति लिखते हैं–''पत्र उनके हाथों में बड़ी देर तक काँपता रहा और फिर उसे उन्होंने जेब में रख लिया। मन में सवाल उठने लगे क्या मिला उसको उन्हें आगे बढ़ाकर? वे बेरोजगार रहते गाँव में खेती बारी करते वह कन्धे से कन्धा मिलाकर खेत में मेहमत करती रात में दोनों सुख की नींद सोते। तीनों लोकों का सुख उसकी मुट्ठी में रहता। छोटे से संसार में आत्मतुष्ट हो जीवन काट देती। उन्हें आगे बढ़ाकर वह पीछे छूट गई। माथे का सिन्दूर और हाथ की चूड़ियां निरन्तर दुख दे रही हैं उसे।''[7]

इस प्रकार इस कहानी के माध्यम से पुरुष समाज द्वारा शोषित स्त्री और पुरुषों की तुच्छ मानसिकता के साथ स्वार्थपटुता की भावना को उजागर किया गया है।

'भरतनाट्यम' कहानी में लिंगभेद एवं यौनशुचिता का प्रश्न उठाया गया है। एक स्त्री को जब लगातार तीन लड़कियां होती हैं हो उसे परिवार के लोग कोसते हैं, कि वह एक बेटा न दे सकी। बेटे की चाहत स्त्री एवं पुरुष दोनों को है। बेटे की चाहत में स्त्री यौन शुचिता के बन्धन को तोड़कर अपने पति के बड़े भाई से भी सम्बन्ध बनाती है और अन्ततः एक दर्जी के

साथ भाग जाती है। शिवमूर्ति पुरुषवादी, मानसिकता को चित्रित करते हुए पुरूष के मुख से कहलवाते हैं–''इस भरी दुनिया में कोई भी..... बेटियां तीन है, बेटे का सहारा म हुआ.....।''[8]

'तिरिया चरित्तर' कहानी पुरुष समाज द्वारा स्त्री का यौन शोषण करने के पश्चात निर्दोष स्त्री को ही दोषी ठहराए जाने एवं उसे अमानवीय दण्ड देने की कहानी है। विमली का विवाह बचपन में ही हो जाता है। बूढ़े माता–पिता की जिम्मेदारी एवं घर की आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण विमली बचपन से ही भट्ठे पर ईंट ढ़ोने का कार्य करने लगती है। मेहनत मजदूरी करके वह घर की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करती है। भट्ठे पर कार्य करते हुए उसकी डरेवर बाबू, कुइसा मिस्त्री और बिल्लर से अच्छी जान पहचान हो जाती है, किन्तु वह अपने दाम्पत्य जीवन की शुचिता को कहीं भी भंग नहीं होने देती है। जीवन पथ पर संघर्ष करते हुए वह अपने चरित्र की पूरी दृढ़ता से रक्षा करती है। उसका पति कलकत्ता में मजदूरी करता है जिसके प्रति विमली में प्रेम और ईमानदारी है। उसे सदैव अपने पति की याद आती रहती है। उसका ससुर बिसराम बहू विमली को लेकर अपने मन में पाप पाले हुए है। विसराम अपने पुत्र को बिना कलकता से बुलाए विमली का गौना कराता है और एक ही झोपड़ी में विमली के साथ रहने लगता है, जिससे बिसराम और विमली को लेकर गांव में तरह–तरह की बातें उठने लगती है। बिसराम विमली का शिकार करने के लिए भेड़िए की तरह नजर गड़ाए हुए है। विमली किसी भी प्रकार से अपनी इज्जत आबरू बचाकर अपने मायके जाना चाहती है। शिवमूर्ति लिखते हैं– ''जान साँसत में पड़ी है विमली की। किसी तरह पत पानी के साथ मायके पहुँच पाती अगर.... या, उसका आदमी आ पहुँचता अचानक। नहीं तो हर रात जंगल की रात! एक रात एक जुग।''[9]

विसराम–धोखे से विमली को चरणामृत में अफीम मिलाकर दे देता है जिसे भगवान का प्रसाद मानकर वह ग्रहण करती है और अफीम के नशे से बेहोशी जैसी नींद में डूब जाती है। और तब बिसराम अपनी बेहोश पुत्रवधू के साथ मुँह काला करता है और बदनामी से बचने के लिए विमली का परपुरुष से सम्बन्ध सिद्ध करने का प्रयास करता है। गाँव का पुरुष समाज इकट्ठा होकर पंचायत का आयोजन करता है जिसमें निर्दोष विमली को दोष पूर्ण पुरुष समाज दोषी ठहराते हुए उसके माथे पर कलछुल की डण्डी को गर्म करके दागने का दण्ड देता है यद्यपि कि मनतोरिया की माई ऐसे गन्दे पितृसत्तात्मक समाज को दोषी ठहराते हुए विमली के निर्दोष होने का समर्थन करती है। वह कहती है–'ई अन्धेर है। दगनी दागना है तो बिसराम और बोधम चौधरी के चूतर कोदागना चाहिए। कोई काहे नहीं पूँछता कि बोधन को बेवा भौजाई

दस साल पहले कुएँ में कूदकर मर गई थी। गाँव की औरतें मुँह खोलने को तैयार हो जाएँ तो बिसराम की घटियायी के वह एक छोड़ दस परमान दे सकती है। वही आदमी बेबस बेकसूर लड़की को दागेगा? और वही बोधन बड़का पग्गड बांधकर दगनी की सजा सुनाएँगे? यही नियाव है? ई पंचायत नियाव करने बैठी है कि अन्धेर करने?

अन्ततः पंचायत विमली को गर्म कलछुल से दागने का दण्ड देने का फैसला करती है जो कि अमानवीय और नितान्त अन्याय है। विमली इस फैसले का प्रतिरोध करते हुए कहती है– ''मुझे पंच का फैसला मंजूर नहीं। पंच अन्धा है पंच बहरा है। पंच में भगवान का 'सत' नहीं है। मैं ऐसे फैसले पर थूकती हूँ।''[11] विमली अन्यायी पुरुष समाज का पूरे साहस के साथ विरोध करती है किन्तु क्रूर पुरुष समाज एक निर्दोष स्त्री को दोषी ठहराकर दण्डित करता हैं जो अत्यन्त अमानवीय है। इस कहानी के माध्यम से शिवमूर्ति ने स्त्री के प्रति पुरुष समाज की घिनौनी मानसिकता को उजागर करते हुए स्त्री के शोषण को अभिव्यक्त किया है।

'केशर कस्तूरी' कहानी भाग्य की विडम्बना को स्वीकार कर लेने वाली स्त्री की कहानी है। केशर सुन्दर व्यक्तित्व एवं सद्गुणों वाली लड़की है उसका विवाह बचपन में ही हो जाता है। कुछ दिनों के लिए वह अपने मौसा के यहां जाती है जहां उसे अत्यन्त सुख सुविधा प्राप्त होती है। कुछ दिनों के बाद केशर का गौना होता है, उसका पति मेहनत मजदूरी करके पैसा कमाता है। गौने के कुछ समय पश्चात केशर की ससुराल में बँटवारा हो जाता है। बँटवारे में उसे आधा एकड़ खेत, एक बैल, सत्ताइस सौ रुपये का कर्ज और बूढ़ी सास मिलती है। अपने मौसा के घर में सुख सुविधा के बीच रहने वाली केशर ससुराल की गरीबी और विपत्तियों के बीच जीवन जीने के लिए बाध्य हो जाती है। जब केशर के बप्पा और मौसा उसके घर जाते हैं तो वहाँ के हालात को देखकर अत्यन्त व्यथित होते है, तब केशर अपने मनोभावों को व्यक्त करते हुए कहती है–'मेरी सोच में अपनी देह न गलाइएगा। जितने दिन आपकी बारी–फुलवारी में खेलना–खाना बदा था, खेले–खाए। अब मेरा हिस्सा मुझे 'अलगिया' मिल गया है। तो जैसा भी है उसे भोगना होगा, खेना होगा। माँ बाप जनम के साथी होते हैं पापा। 'करम रेख' तो सभी की न्यारी है।''[12]

शिवमूर्ति लिखते है– ''यह केशर नहीं, केशर के रूप में मूर्त हिन्दुस्तानी नारी का हजारों–हजार पीढ़ियों से विरासत में मिला अनुभव और यथार्थ को उसके ठोस व्यावहारिक रूप

में पकड़ लेने की उसको अन्तश्चेतना बोल रही थी।''[13] इस कहानी के माध्यम से शिवमूर्ति ने स्त्री जीवन की यथार्थवादी अन्तश्चेतना को उद्घाटित किया है।

सारांशतः शिवमूर्ति आजादी के बाद के ग्रामीण परिवेश के यथार्थ को व्यक्त करने वाले रचनाकार हैं। उनके लेखन के केंद्र में मुख्य रूप से ग्रामीण स्त्री रही है जिससे उनकी कहानियाँ ग्रामीण स्त्री चेतना के यथार्थ को उद्घाटित करती है। 'केशर कस्तूरी' कहानी संग्रह में मुख्य रूप से स्त्री चेतना के यथार्थ को व्यक्त करते हुए स्त्रियों की पीड़ा तथा उनके अधिकार की बात की गई है। इस संग्रह की प्रत्येक कहानी पुरुष समाज पर प्रश्न चिह्न लगाती हैं। इस प्रकार शिवमूर्ति का कहानी संग्रह 'केशर–कस्तूरी' स्त्री चेतना की दृष्टि से सफल है।

संदर्भः–

1. केशर कस्तूरी', 'शिवमूर्ति', राजकमल प्रकाशन, दिल्ली संस्करण–2015, पृ0–9
2. बही पृ0–8
3. बही पृ0–17
4. बही पृ0–23
5. बही पृ0–37
6. बही पृ0–51
7. बही पृ0–58
8. बही पृ0–79
9. बही पृ0–106
10. बही पृ0–122
11. बही पृ0–122
12. बही पृ0–139
13. बही पृ0–139

THE RESEARCH DIALOGUE

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed /Refereed National Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-2, Issue-2, July-2023
www.theresearchdialogue.com
Certificate Number July-2023/36
Impact Factor (IIJIF-1.561)
https://doi-ds.org/doilink/01.2023-11922556

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

नीरज कुमार पाण्डेय

for publication of research paper title

शिवमूर्ति की कहानियों में स्त्री चेतना (विशेष सन्दर्भ:'केशर कस्तूरी')

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-02, Issue-02, Month July, Year-2023.

Dr. Neeraj Yadav
Executive Chief Editor

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Editor-in-chief

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.theresearchdialogue.com

INDEXED BY